

डॉ. क्रेग कीनर, अधिनियम, व्याख्यान 13, अधिनियम 10-11

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 13, अधिनियम अध्याय 10 और 11 है।

प्रेरितों के काम अध्याय 10 में, हम कुरनेलियुस के बारे में कथा पर आते हैं, जो सबसे पहले और सबसे लंबे समय तक कुरनेलियुस के बारे में बात करता है।

पिछले सत्र में, हमने अधिनियमों के अध्याय 10 और पद 1 के बारे में, कैसरिया के बारे में और रोमन सैन्य सेवा के बारे में, और कॉर्नेलियस की पृष्ठभूमि के रूप में सेंचुरियन के बारे में कुछ परिचयात्मक सामग्री पेश की थी। तो अब हम अध्याय 10 और श्लोक 2 पर आ रहे हैं। यहूदी लोगों द्वारा उनकी सराहना की जाती थी जो उन्हें उनकी भिक्षा के कारण जानते थे। और यह दिलचस्प है क्योंकि आपको ल्यूक अध्याय 7 में याद है, आपके पास एक सूबेदार है जिसने स्थानीय आराधनालय का समर्थन किया था, और यहूदी लोग आए और उसकी ओर से बात की।

खैर, इस मामले में, यह भगवान के प्रति समर्पण व्यक्त करता है। यह स्वयं को सांस्कृतिक रूप से विनम्र करने को भी व्यक्त करता है क्योंकि यहूदी रीति-रिवाजों का पालन करना माना जाता था, और कभी-कभी कुछ अन्य लोगों के समूहों द्वारा इसे हेय दृष्टि से देखा जाता था। हम यहां साधकों में भगवान की रुचि भी देखते हैं।

और एक ऐसी भावना है जिसमें हममें से कोई भी ईश्वर की खोज नहीं करता है, लेकिन एक ऐसी भावना भी है जिसमें ईश्वर ने हमारे दिलों को उसकी तलाश करने के लिए प्रेरित किया है। जब मैं नास्तिक था, तो मैं वास्तव में सोचने लगा, अगर मैं गलत हूं तो क्या होगा? अगर ईश्वर है तो क्या होगा? उन चीजों में से एक जिसने मुझे उस दिशा में प्रेरित किया, पहले से ही जब मैं 13 वर्ष का था, तब मैं प्लेटो को पढ़ रहा था और आत्मा की अमरता और इसके लिए उनके तर्कों के बारे में उन्होंने जो कहा था, उसके बारे में सोच रहा था, विशेष रूप से पूर्व-अस्तित्व के कारण जन्मजात ज्ञान के बारे में। वो आत्मा। मैंने नहीं खरीदा, लेकिन यद्यपि मैंने आत्मा के पूर्व-अस्तित्व के उनके विचार को नहीं खरीदा, अमरता के बारे में उन्होंने जो प्रश्न पूछे, उन्होंने मुझे वास्तव में परेशान कर दिया क्योंकि मुझे पहचानना था कि मैं सीमित था, मैं नश्वर था, और मैं था मरने वाला है।

और एकमात्र तरीका जिससे मैं हमेशा के लिए जीवन पा सकता था वह यह था कि अगर कोई ऐसा व्यक्ति होता जो अनंत होता, जो मुझे यह प्रदान करना चुनता। लेकिन अगर ऐसा कोई प्राणी होता, तो वह प्राणी मेरी परवाह क्यों करता? केवल यदि वह प्राणी पूरी तरह से प्रेमपूर्ण होता, तो वह सभी संभव चीजों में सर्वोत्तम होता। लेकिन अगर वह प्राणी पूरी तरह से प्रेमपूर्ण होता, तो वह मुझसे प्रेम क्यों करता? क्योंकि मैं निश्चित रूप से पूरी तरह से प्यार करने वाला नहीं था।

मैं जानता था कि मैं बहुत स्वार्थी हूँ। और एकमात्र कारण जिसके बारे में मैं जानना चाहता हूँ वह यह था कि मैं हमेशा के लिए जीना चाहता था। खैर, यही मुख्य कारण था कि मैं उस अस्तित्व को जानना चाहता था।

और जब मैंने सुसमाचार सुना, तो पवित्र आत्मा ने मुझे छुआ और मेरा मसीह से साक्षात्कार हुआ और मैं परिवर्तित हो गया। और मैं ईश्वर का आभारी हूँ जो एक ऐसे साधक तक पहुंचा जिसका उस पर कोई दावा नहीं था। मैं किसी ईसाई घर या ऐसी किसी चीज़ से नहीं आया हूँ।

यह व्यक्ति ईश्वर से डरने वाला था। वह मुझसे कहीं अधिक आगे था। वह संभवतः आराधनालय में भाग ले रहा था।

उन्हें एक सच्चे ईश्वर में बहुत रुचि थी। उन्होंने पहचान लिया कि यही सच्चा ईश्वर है, कम से कम सबसे महान ईश्वर। उसका खतना नहीं हुआ था।

वह मतान्तरित व्यक्ति की श्रेणी में नहीं था। वह उस श्रेणी में था जिसे कुछ यहूदी लोग धर्मी अन्यजाति कहते थे, जो अपने ईश्वर को पहचानते थे। वे मूर्तियों का अनुसरण नहीं करते थे और वे यौन अनैतिकता का अभ्यास नहीं करते थे।

परन्तु वह वाचा के लोगों का हिस्सा नहीं बना था। उसका खतना नहीं हुआ था। यह समूह, ईश्वर-भयभीत, चाहे उस शीर्षक से या अन्य द्वारा, जोसेफस और फिलो में प्रमाणित है, अक्सर शिलालेखों में, विशेष रूप से एशिया माइनर में एफ्रोडिसियास में।

कुरनेलियुस अभी तक पूरी तरह से यहूदी धर्म में परिवर्तित नहीं हुआ था। हम जानते हैं कि कई सैनिक धर्म में रुचि रखते थे और आप समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों होगा। वे विभिन्न धर्मों में रुचि रखते थे।

कुरनेलियुस को यहूदी धर्म में रुचि थी। अब, यह श्लोक दो में उसके घराने के बारे में भी बात करता है। वह स्वयं विवाह नहीं कर सकता था, कम से कम आधिकारिक रोमन कानून के अनुसार तो नहीं।

वह अनौपचारिक रूप से विवाह कर सकता था। रोमन कानून के तहत उसे उपपत्नी माना जाएगा। लेकिन आपकी 20 वर्षों की सैन्य सेवा के दौरान, और शायद इससे अधिक समय तक यदि वह एक सेंचुरियन के रूप में लंबे समय तक रहा होता, तो आपकी 20 वर्षों की सैन्य सेवा या उससे अधिक समय के दौरान, आप आधिकारिक तौर पर शादी नहीं कर सकते थे।

अक्सर यह किया जाता था कि आपके सेवानिवृत्त होने के बाद, वे यह अनुदान देते थे कि आपकी उपपत्नी को पत्नी के रूप में गिना जाएगा, बशर्ते कि आपके पास केवल एक ही पत्नी हो। इसलिए जो सैनिक बहुत इधर-उधर घूमते थे, सेंचुरियन शायद और भी अधिक, जो बहुत इधर-उधर घूमते थे, उन्हें आम तौर पर अपनी सबसे हालिया उपपत्नी से शादी करनी पड़ती थी क्योंकि जब सेना चलती थी तो वे अपनी उपपत्नी को अपने साथ नहीं ले जा सकते थे। हालाँकि, कैसरिया में,

हम जानते हैं कि जब सैनिकों को बाद में दंडित किया जा रहा था, तो उन्होंने न हिलने की भीख माँगी थी।

इसलिए, वे अपने स्थानीय क्षेत्र से बहुत जुड़े हुए थे, क्योंकि उन क्षेत्रों में कई सैनिक थे जहाँ कोई युद्ध नहीं चल रहा था। हम नहीं जानते कि वह शादीशुदा था या नहीं या उसकी कोई उपपत्नी थी या नहीं। कुछ लोग सोचते हैं कि वह एक सेवानिवृत्त सेंचुरियन भी थे और इसीलिए उनका एक आधिकारिक रोमन नाम है, भले ही यह एक सहायक इकाई है।

लेकिन फिर, एक सेंचुरियन के रूप में, उसे सेना से उधार लिया गया होगा और वह पहले से ही एक रोमन नागरिक रहा होगा क्योंकि वह एक सैनिक के साथ-साथ नौकरों को भी भेजने में सक्षम है। तो, संभवतः उसका अभी भी कुछ प्रभाव है। फिर, हम यह भी जानते हैं कि कैसरिया के आसपास अनुशासन ढीला था।

और इसलिए शायद एक पूर्व शताब्दीपति के रूप में, वह एक ऑफ-ड्यूटी सैनिक को काम पर रख सकता था। हम बहुत अधिक विवरण नहीं जानते हैं, लेकिन किसी भी मामले में, ऐसा लगता है कि उसके कुछ रिश्तेदार वहाँ थे, शायद इसलिए कि उसे स्थानीय स्तर पर भर्ती किया गया था या शायद इसलिए कि उसकी एक रखैल थी और ये उसके रिश्तेदार थे, हो सकता है कि उसकी पत्नी हो सेवानिवृत्त थे और ये उनके रिश्तेदार थे। श्लोक 24 में, यह रिश्तेदारों की बात करता है।

और वहाँ इस शब्द का अर्थ, घरेलू शब्द के विपरीत, उन लोगों से है जो आनुवंशिक रूप से उससे संबंधित हैं या आनुवंशिक रूप से उसकी पत्नी से संबंधित हैं, न कि केवल नौकर जिन्हें घर का हिस्सा माना जा सकता है। पत्नियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने पति के धर्म को साझा करें, इसलिए ऐसा हमेशा नहीं होता था। लेकिन अक्सर जब पति धर्म परिवर्तन करता था, तो पत्नी भी धर्म परिवर्तन कर लेती थी, और परिवार भी धर्म परिवर्तन कर लेता था।

हम नहीं जानते कि यहाँ गृहस्थी का क्या मतलब है। शायद इसका मतलब नौकर हो सकता है, शायद इसका मतलब मुक्त व्यक्ति हो सकता है। श्लोक 7 में, आपके पास यह भी हो सकता है क्योंकि एक बार एक नौकर को मुक्त कर दिया जाता है, तो पूर्व दास धारक को समाज में आगे बढ़ने में मदद करने के लिए मुक्त व्यक्ति के प्रति सामाजिक दायित्वों का सामना करना पड़ता है।

मुक्त व्यक्ति पर दासधारक के विस्तारित परिवार के हिस्से के रूप में पूर्व दासधारक के प्रति कुछ सामाजिक दायित्व होते हैं। खैर, सबसे सस्ते गुलाम एक नियमित सैनिक के वार्षिक वेतन का लगभग एक-तिहाई था। लेकिन सेंचुरियनों को साधारण सैनिकों से 15 गुना अधिक वेतन मिलता था।

और सेना में सबसे अधिक वेतन पाने वाला सेंचुरियन 60 गुना अधिक कमा सकता है। खैर, एक सेंचुरियन के रूप में, शायद शायद सिर्फ एक नियमित सेंचुरियन के रूप में, वह सामान्य सैनिकों की तुलना में 15 गुना वेतन कमा सकता है। आयत 3 कहती है कि ऐसा होता है, वह लगभग 3 बजे प्रार्थना कर रहा था अब वह यहूदी शाम की प्रार्थना का समय था।

तो, वह वास्तव में प्रार्थना के नियमित घंटों के दौरान भी प्रार्थना कर रहा है। उसके पास एक दृष्टिकोण है। और दिलचस्प बात यह है कि पीटर के पास भी एक दृष्टि है।

यह बाद में है, लेकिन यह तब है जब यह स्पष्ट रूप से अगला दिन है, लेकिन ऐसा तब नहीं है जब यह कॉर्नेलियस के साथ एक साथ नहीं है, लेकिन यह कॉर्नेलियस की दृष्टि पर भी निर्भर नहीं है। यह स्वतंत्र है। यह दैवीय रूप से समन्वित है।

खैर, पद 9 में, वे कैसरिया से याफा तक पतरस तक पहुँचने के लिए यात्रा करते हैं। कैसरिया याफा से लगभग 30 मील उत्तर में था। इसलिए, भले ही वे दोपहर 3 बजे के तुरंत बाद निकलें, उन्हें या तो पूरी रात पैदल यात्रा करनी होगी या दोपहर तक जोप्पा पहुँचने के लिए घोड़ों पर यात्रा करनी होगी।

इसलिए, वे इसे एक जरूरी मिशन के रूप में देखते हैं। कल्पना कीजिए कि क्या होता यदि पीटर को यह पता लगाने में बहुत समय लगता कि क्या करना है या यदि पीटर ने उन्हें यूँ ही भेज दिया होता। परन्तु परमेश्वर ने, जिसने पतरस से, जो शमौन टान्नर के साथ रह रहा था, जाँच करने को कहा, पतरस को यह जानने की भी व्यवस्था की कि उसे क्या करना चाहिए।

पतरस प्रार्थना करने के लिये छत पर गया। खैर, उनकी छतें सपाट थीं। इनका उपयोग अक्सर सब्जियाँ सुखाने के लिए किया जाता था।

उनका उपयोग निजी प्रार्थना या किसी भी चीज़ के लिए किया जा सकता है। यदि वह एक छत्र के नीचे होता, तो दोपहर के समय भी यहूदिया के अधिकांश घरों की तुलना में अधिक ठंडक होती। लेकिन यह कोई नियमित घंटे की प्रार्थना नहीं है।

पीटर को सिर्फ प्रार्थना करना पसंद है या प्रार्थना करने का मन करता है। यह अच्छी बात थी। लेकिन श्लोक 10 में, हमें पता चलता है कि वे उसके लिए भोजन तैयार कर रहे हैं, लेकिन वह स्पष्ट रूप से भूखा है।

दोपहर भोजन के लिए एक सामान्य समय था, कम से कम कुछ स्थानों पर। हम जानते हैं कि यह रोम में था। खैर, फिर उसके पास यह दृष्टि है, श्लोक 14 से 16 में एक अत्यंत भयावह आहार का दर्शन।

आप सोच सकते हैं कि आपकी संस्कृति या आपके अपने स्वाद में कौन सा भोजन आपके लिए सबसे भयावह होगा। पीटर के लिए, सांस्कृतिक रूप से, कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिन्हें वह कभी नहीं खाएगा। अध्याय 10 की आयत 12 में, जिन जानवरों को चादर में छोड़ा जाता है उनमें शुद्ध जानवर शामिल हैं, अर्थात् वे जिन्हें लैव्यव्यवस्था 11 के अनुसार खाने की अनुमति थी, और अशुद्ध जानवर भी।

समस्या यह है कि यदि उन्हें एक साथ मिला दिया जाए तो वे सभी अशुद्ध हो जाते हैं। और इसलिए वस्तुतः ये अशुद्ध जानवर हैं। और पीटर विरोध करता है।

और यह दृश्य बिल्कुल वैसा ही है जैसा आपके पास यहजेकेल 4, 13 से 15 में है, जहां भगवान यहजेकेल को मानव गोबर के ऊपर यह भोजन तैयार करने के लिए कहते हैं। और वह कहता है, हे भगवान, यह अशुद्ध है। और भगवान उसका विरोध सुनकर कहते हैं, ठीक है, तुम इसे गाय के गोबर के ऊपर पका सकते हो।

खैर, इस मामले में, पतरस कहता है, हे भगवान, मैंने कभी कोई अशुद्ध चीज़ नहीं खाई है। मेरा मतलब है, वह टात्रर के साथ रहने को तैयार है, लेकिन आप केवल इतनी दूर जाते हैं। मैकाबीज़ अशुद्ध भोजन खाने के बजाय मरने के लिए तैयार थे।

तो, जैसा कि विद्वान अक्सर कहते हैं, यह यहूदी जातीयता के सीमा चिह्नों में से एक था। कुछ ऐसी चीज़ें थीं जो आंशिक रूप से यहूदी धर्म की महत्वपूर्ण विशिष्टताएँ बन गईं क्योंकि ये ऐसी चीज़ें थीं जिनका विरोध करने के लिए उनके पूर्वजों को मरना पड़ा था। लेकिन ईश्वर ही वह है जिसने आरंभ में चीज़ों को अशुद्ध घोषित किया, और ईश्वर किसी भी चीज़ को शुद्ध घोषित कर सकता है, जिसमें अन्यजातियों सहित, जैसा कि हम बाद में 10:28 और 15:9 में इसका पाठ देखते हैं।

परमेश्वर अन्यजातियों को शुद्ध कर सकता है। वह उन्हें अशुद्ध कर सकता है। खैर, पीटर को यह दृष्टि मिलती है।

इस बीच, कुरनेलियुस के दूत उसके पास आ रहे हैं। 10:17 से 23ए में, पीटर और साइमन के परिवार को अन्यजातियों का स्वागत है। खैर, उन्होंने पद 17 में पतरस को कैसे पाया? जोप्पा एक बड़ा शहर था, लेकिन उन्हें उसे ढूँढने के लिए कहा गया था।

साइमन चर्मकार. खैर, चर्मकार सामान्यतः पानी के पास होंगे, और वे चर्मशोधन जिले में होंगे, क्योंकि यही वह जिला है जहाँ से बदबू आती है, उन जिलों में से एक जहाँ से सबसे अधिक बदबू आती है। और इसलिए, ऐसा करने के लिए लोग पूरे शहर में बिखरने के बजाय एक साथ रहेंगे।

खैर, एक बार जब आप वहाँ पहुंच जाते हैं, तो आप बस दिशा-निर्देश पूछते हैं। लोगों ने यही किया। लेकिन चर्मकार साइमन कहाँ है? साइमन एक सामान्य नाम था, लेकिन जाहिर है, वहाँ साइमन नाम के बहुत सारे चर्मकार नहीं थे।

तो, यह कहता है कि वे बाहरी द्वार पर आते हैं। ठीक है, अगर उसके पास बाहरी द्वार है, तो वह कुछ साधन संपन्न व्यक्ति है। उसके पास कुछ धन है, जिससे उसे पीटर को अपने साथ रहने के लिए जगह मिल जाती है।

फिर पद 18 से 22 में, खैर, वे पुकारते हैं। उन्होंने क्यों पुकारा और गेट के अंदर क्यों नहीं गए? खैर, एक बात के लिए, यह औचित्य का मामला है, लेकिन दूसरी बात के लिए, वे अशुद्ध हैं। उन्हें यहूदी घर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं है।

और साइमन चर्मकार हो सकता है, लेकिन वह निश्चित रूप से यहूदी है। मेरा मतलब है, इस तथ्य को देखते हुए कि पीटर को अन्यजातियों के घरों को साफ करने में कुछ समस्याएं हैं, स्पष्ट रूप से यह साइमन टान्नर यहूदी है। हम यहां पवित्र आत्मा की भूमिका देखते हैं।

सबसे पहले, हम पतरस के दर्शन को देखते हैं। लेकिन दूसरी बात, 10:19 में, जब वह यह सोचने की कोशिश कर रहा था कि इस दर्शन का क्या मतलब हो सकता है, पवित्र आत्मा कहता है, कुछ लोग हैं जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा है, उनके साथ जाओ। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा हम अध्याय आठ के श्लोक 29 में देखते हैं, जहां आत्मा फिलिप से कहती है, जाओ, अपने आप को इस रथ में शामिल करो।

जब एक स्वर्गदूत पहले ही उसे कुछ दिशा दे चुका होता है, तो आत्मा उसे तत्काल दिशा देता है। हम अपने जीवन में हमारा नेतृत्व करने के लिए आत्मा पर भरोसा कर सकते हैं, लेकिन कुछ चीजें हैं जिनके बारे में आत्मा विशेष रूप से बात करना पसंद करता है। ल्यूक विशेष रूप से बाधाओं को पार करने पर जोर देना पसंद करते हैं, कि कैसे आत्मा हमें अन्य लोगों के समूहों तक पहुंचने और अन्यजातियों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करती है।

इसलिए, ल्यूक इस विशेष तरीके से आत्मा की भूमिका पर जोर देता है। और कभी-कभी आत्मा नाटकीय चीजें करेगा। मुझे याद है एक बार मैं चल रहा था और मेरे सामने एक युवक था, शायद मेरे सामने एक ब्लॉक था।

और आत्मा ने मुझ से आग्रह किया, उसका नाम पुकार, और मुझे उसका नाम दिया। और मैंने सोचा, क्या यह सचमुच उसका नाम है? मुझे उसे बुलाना चाहिए था। मैं बस उसके पास दौड़ा और कहा, हाय, मैं क्रेग हूं।

और उस ने अपना नाम बताया, जो पवित्र आत्मा ने कहा था। और मैंने कहा, ओह, मुझे इसका आह्वान करना चाहिए था। लेकिन फिर भी, वह मेरी पहली कोशिश थी।

लेकिन पीटर और फिलिप ने, सौभाग्य से, पहली बार में आज्ञा का पालन किया। मुझे उनके साथ मसीह को साझा करने का मौका मिला। और मैंने उसे बताया कि पवित्र आत्मा ने मुझसे ऐसा कहा था, और उसने मुझ पर विश्वास किया।

लेकिन किसी भी मामले में, पीटर नीचे चला गया। यह संभवतः सपाट छत से जाने वाली बाहरी सीढ़ी के नीचे होगा। कभी-कभी उनके पास सीढ़ियाँ होती थीं, लेकिन याद रखें कि अगर इस आदमी के पास बाहरी द्वार है, तो उसके पास निश्चित रूप से एक सीढ़ी है।

श्लोक 23ए, ठीक है, उन्होंने अन्यजातियों को रात भर अपने साथ रहने दिया। फ़रीसी अशुद्ध टेबल फ़ेलोशिप के बारे में चिंतित थे, लेकिन उन्होंने उचित आतिथ्य दिखाया। वे उन्हें खाना खिलाते हैं और रात भर उन्हें ठहराते हैं।

टान्नर सख्त नियमों से कम चिंतित हो सकते हैं और जोप्पा एक मिश्रित शहर था। तो, वह शायद अन्यजातियों वगैरह को जानता था, खासकर अगर टैनिंग जिला, यह सिर्फ यहूदी चर्मकार नहीं है,

बल्कि अन्य चर्मकार भी इस क्षेत्र में हो सकते हैं, बजाय इसके कि शहर का अधिकांश भाग अलग हो जाए। लेकिन किसी भी मामले में, यह एक समस्या थी, खासकर सख्त सदस्यों के लिए।

हम देखेंगे कि जब हम अध्याय 15 के पद पाँच में पहुँचते हैं, तो कुछ फरीसी भी विश्वासी बन गए हैं और वे अभी भी अपनी सख्त नीतियों का पालन करते हैं और यह उनके लिए एक मुद्दा बन जाता है। तो, इस बिंदु पर, यह कोई मुद्दा नहीं है क्योंकि इसके बारे में जानकारी नहीं मिली है, लेकिन जल्द ही यह बात सामने आ जाएगी कि आगे क्या होने वाला है। 10.23बी से 33 तक, कुरनेलियुस ने पीटर को प्राप्त किया।

तो, आतिथ्य सत्कार दोनों तरफ से होने वाला है। 10.23बी, पीटर अतिरिक्त साथी लेता है। वह अपने साथ छह लोगों को ले जाता है।

तो, उनमें से सात हैं। खैर, हमने वह नंबर पहले भी देखा है, लेकिन वह अपने साथ छह आदमी क्यों ले जाता है? खैर, वह चाहता है कि जो कुछ भी हो उसके गवाह रहें कि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया। 1915 में व्यवस्थाविवरण 17.6, आपके पास कम से कम दो या तीन गवाह होने चाहिए और पीटर की पूरी संख्या दोगुनी होनी चाहिए।

लेकिन 10:24 बजे सूर्योदय के आसपास वे चले गए। यह 30 मील है। तथ्य यह है कि पाठ कहता है कि वे अगले दिन पहुंचे, इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि वे रास्ते में रात भर रुके थे, श्लोक 30।

वे शायद एक मिश्रित शहर में रुके थे, शायद अपोलोनिया, जो वहां से आधे रास्ते से थोड़ा ही दूर था। और फिर हम पद 25 और 26 पर आते हैं। अब, कुरनेलियुस एक ईश्वर-भयभीत हो सकता है, लेकिन वह पतरस को ऐसे सम्मान देता है जैसे कि वह दिव्य हो।

बुतपरस्तों ने इसे दूसरों को पेश किया। हम 14:11 में देखते हैं कि लुस्त्रा के लोग बरनबास और पॉल के साथ ऐसा करने की कोशिश करते हैं। 28:6 में, हम देखते हैं कि माल्टा के कुछ स्थानीय निवासी सोचते हैं कि पॉल एक भगवान है।

इसलिए, वह यह श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। हो सकता है कि उसका यह अर्थ दैवीय न हो। हो सकता है कि उसका मतलब किसी दिव्य व्यक्ति या राजा के प्रतिनिधि का स्वागत करने का एक तरीका हो।

पूर्व में, लोग अक्सर राजाओं के सामने झुकते थे, हालाँकि यह इस बात पर निर्भर करता था कि आप किस समूह से हैं। कुछ लोग ऐसा करने को तैयार नहीं होंगे। लेकिन 10.27 से 29 तक, हमने पीटर की प्रतिक्रिया पढ़ी।

पतरस ने सबसे पहले कुरनेलियुस को उसके सामने झुकने से हतोत्साहित किया। उन्होंने दैवीय श्रद्धांजलि से इनकार कर दिया, जिसे अन्यजातियों द्वारा भी उचित व्यवहार माना जाता था। जब तक आप सम्राट नहीं थे, यह उचित व्यवहार था।

आपको लोगों को अपने सामने झुकने से हतोत्साहित करना था। खैर, 27 से 29 में, पीटर बताते हैं, धर्मनिष्ठ यहूदी मूर्तिपूजकों के घरों में प्रवेश नहीं करेंगे। और भले ही कुरनेलियुस शायद मूर्तिपूजक नहीं है, यह स्पष्ट रूप से किसी भी गैर-यहूदी के घर तक फैला हुआ है।

और जहाँ तक तुम्हें पहले से मालूम होगा, मेरा मतलब है, यह मूर्तिपूजक हो सकता है। हालाँकि जब तक पीटर उन लोगों से बात कर रहा होगा जिन्हें रास्ते में भेजा गया था, आपको शायद पता चल जाएगा कि मामला ऐसा नहीं है। परन्तु उनका भोजन खाना या उनका दाखमधु पीना अशुद्ध था।

कुरनेलियुस भले ही मूर्तिपूजक न हो, परन्तु वह उसके सामने झुक गया। परन्तु पतरस कहता है, तुम जानते हो, यह अशुद्ध माना जाता है। इससे भोजों में एक साथ भोजन करना वर्जित हो गया।

इसलिए आम तौर पर यहूदी लोग और अन्यजाति एक साथ भोज नहीं करते थे। और इसी कारण से, अन्यजातियों ने यहूदी लोगों को असामाजिक समझा। यह यहूदी लोगों की गलती नहीं थी।

जैसा कि आप जानते हैं, लैव्यव्यवस्था 11 में यह आंशिक रूप से कहा गया है कि परमेश्वर ने उन नियमों को स्थापित किया था, ताकि वह उन्हें राष्ट्रों से अलग रख सके। लेकिन अब ईश्वर उससे आगे बढ़ रहा है क्योंकि वह उन्हें राष्ट्रों के पास, यीशु में विश्वास करने वाले यहूदी लोगों को गवाह के रूप में भेज रहा है। खैर, 10.34 से 43 तक, हमने पीटर के संदेश के बारे में पढ़ा।

क्या हम पतरस की तरह प्रचार करने के लिए तैयार हैं? यदि हम पतरस की तरह पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होना चाहते हैं, तो हमें अपने पूर्वाग्रहों से उबरने के लिए तैयार रहना होगा। पद 38 में, वह यीशु के भलाई करने, अर्थात् परोपकारी होने के बारे में बात करता है। वहाँ यूनानी शब्द वही है जो परोपकारियों के लिए प्रयोग किया जाता था।

हमने इसके बारे में पहले बात की थी। वह भाषा प्रायः शासकों द्वारा प्रयोग की जाती थी। इसका प्रयोग अक्सर देवताओं के लिए किया जाता था।

और यीशु सिर्फ लोगों के लिए अच्छा कर रहे थे। यह बताता है कि कैसे भगवान ने नासरत के यीशु का अभिषेक किया। ल्यूक अध्याय 4 में, यीशु ने यशायाह 61 को इस मिशन को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा से अभिषिक्त होने के संदर्भ में उद्धृत किया है, जो निश्चित रूप से, जैसा कि हमने अधिनियम अध्याय 2, अधिनियम अध्याय 1 और 2 में देखा है, चर्च के लिए भी एक मॉडल है।

हालाँकि यह अभिषेक की भाषा का उपयोग नहीं करता है, हम मसीह नहीं हैं। नए नियम के कुछ अन्य भाग उस भाषा का उपयोग करते हैं, लेकिन हम आत्मा द्वारा सशक्त हैं। 10.42 में, अधिकांश यहूदी धर्म में, ईश्वर स्वयं न्यायाधीश है, लेकिन यहाँ यीशु सर्वोच्च न्यायाधीश है।

इसके अलावा, श्लोक 36 में, सबका स्वामी, वह निश्चित रूप से दैवीय शब्दावली थी, हालाँकि इसका उपयोग सम्राट के लिए भी किया गया था। और अब पीटर किसी ऐसे व्यक्ति को उपदेश

दे रहा है जो सम्राट की सेवा में है। श्लोक 43 में, सभी भविष्यवक्ताओं ने मसीहा में ईश्वर की कृपा के माध्यम से क्षमा की गवाही दी है।

खैर, शायद उनका आशय यह है कि सामान्य अर्थ में भविष्यवक्ता आने वाले युग में, मुक्ति के समय में मसीहाई पुनर्स्थापना के बारे में बात कर रहे हैं। और इसलिए वह भविष्यवक्ताओं को उसी तरह पढ़ता है, जैसे स्टीफन ने प्रेरितों के काम अध्याय 7 में किया था, और ल्यूक पूरे ल्यूक-एक्ट्स में करता है। यह समझ है, जैसा कि यीशु एम्मास के लिए मार्ग समझा रहे थे, और जैसा कि यीशु बाद में ल्यूक अध्याय 24 में अपने शिष्यों को समझा रहे थे, कि सभी कानून और भविष्यवक्ता उसके बारे में बात करते हैं क्योंकि सिद्धांत उसी की ओर इशारा करते हैं।

वे अंततः उसमें पूर्ण होते हैं। 10:44 से 48, हमारा सामना बचाए गए अन्यजातियों से होता है, जो वास्तव में यरूशलेम में चर्च को हिला देने वाला है। क्या हम न केवल पतरस और अन्य लोगों के उदाहरण से, बल्कि परमेश्वर की अपनी गतिविधि से भी सीखने के लिए तैयार हैं? खैर, पीटर को उससे सीखना था।

श्लोक 44 में उनका उपदेश बाधित है। वह एक सामान्य साहित्यिक युक्ति थी। जहां तक लेखक का संबंध है, यदि व्यक्ति वह सब कुछ कह चुका है जो कहा जाना आवश्यक था, तो उसे रोका जा सकता था।

हालाँकि, यह भी एक सामान्य उपकरण या वास्तविक जीवन की एक सामान्य विशेषता थी। लोग नियमित रूप से वक्ताओं को बाधित करते थे। हालाँकि, इस मामले में, यह वक्ता को बाधित करने वाला व्यक्ति नहीं है।

यह पवित्र आत्मा है। पवित्र आत्मा उन सभी पर उतरा जो पतरस की बात सुन रहे थे। और हम श्लोक 45 से 47 में पतरस और उसके साथ के लोगों की प्रतिक्रिया के बारे में पढ़ते हैं।

खैर, और भविष्यवक्ताओं, आत्मा का उंडेला जाना केवल इस्राएल के लिए था। खैर, सामरियों को वास्तव में इज़राइल के लोगों का हिस्सा नहीं माना जाता था, लेकिन शिष्य इससे उबरने में सक्षम थे। मेरा मतलब है, आप जानते हैं, वे एक ईश्वर की पूजा करते थे इत्यादि।

और वे एक प्रकार से इस्राएल थे। वे इस्राएल और अन्यजातियों के बीच में थे। लेकिन आत्मा के उंडेले जाने का यह युगांतकारी वादा, जो इस्राएल के लिए था, यहेजकेल 36, यशायाह 44, इत्यादि।

पीटर ने सभी प्राणियों पर आत्मा उंडेले जाने के बारे में जोएल को उद्धृत किया था, लेकिन निस्संदेह पीटर ने मान लिया था कि इसका अर्थ सभी यहूदी प्राणियों पर होगा। मेरा मतलब है, परिच्छेद का संदर्भ भगवान के लोगों की बहाली के बारे में है। तो यहां वे हैरान हैं।

परमेश्वर इन अन्यजातियों पर आत्मा उँडेल रहा है, उनके साथ ऐसा व्यवहार कर रहा है जैसे कि वे परमेश्वर के लोग हों। इस अवधि में अधिकांश यहूदी शिक्षकों ने सोचा कि यदि वर्तमान समय में आत्मा उपलब्ध है, तो यह मृत सागर स्कॉल नहीं है, बल्कि अन्य यहूदी शिक्षक हैं, अधिकांश

यहूदी शिक्षकों ने महसूस किया कि आत्मा केवल सबसे पवित्र लोगों के लिए उपलब्ध होगी और आमतौर पर उन्हें भी नहीं। ऐसा कहा जाता था कि हिल्लेल की पीढ़ी के बारे में, हिल्लेल पवित्र आत्मा प्राप्त करने के योग्य था, लेकिन आत्मा फिर भी उस पर नहीं आई क्योंकि उसकी पीढ़ी किसी ऐसे व्यक्ति के योग्य नहीं थी जिसके पास आत्मा हो।

खैर, जाहिर तौर पर ईसाई कुछ बहुत अलग अनुभव कर रहे हैं। वे आत्मा के उंडेले जाने का अनुभव कर रहे हैं, लेकिन उन्होंने अन्यजातियों के साथ ऐसा होने की उम्मीद नहीं की थी। और वे ध्यान देते हैं, ठीक है, यह वही उपहार है जो हमें दिया गया था।

यह कहता है, क्योंकि उन्होंने उन्हें अन्य भाषाओं में बोलते हुए सुना। अब, क्या इसका मतलब यह है कि जब लोग आत्मा प्राप्त करते हैं तो जीभ हमेशा बोलती रहती है? खैर, इसका उल्लेख अध्याय 8 और श्लोक 15 में नहीं है, और इसीलिए लोगों ने इस पर दोनों तरह से तर्क दिया है। लेकिन इस मामले में, यह पुष्टि करता है कि इन लोगों को उसी तरह से आत्मा प्राप्त हुई है जैसे उन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन में प्राप्त किया था।

दूसरे शब्दों में, ठीक है, जब हमने आत्मा प्राप्त किया तो हमारे साथ यही हुआ, यही बात उनके साथ भी हुई है। तो, यह भी वही संकेत देगा जो उसने पेंटेकोस्ट के दिन किया था, कि ये लोग अब मसीह के गवाह के रूप में सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने के लिए सशक्त हैं, जिसका अर्थ है कि ये अन्यजाति अब मंत्रालय में भागीदार बन जाएंगे। ये अन्यजातियाँ भी प्रभु का वचन आगे बढ़ाएंगी।

और यही किसी मिशन को करने का उचित तरीका है। हम लोगों के साथ अच्छी खबर साझा करते हैं, लेकिन एक बार जब वे अच्छी खबर सुनते हैं, तो हम पैतृक तरीके से उनकी सेवा नहीं करते हैं, बल्कि हम भगवान के सेवक के रूप में एक साथ सेवा करते हैं, हम सभी एक साथ। अध्याय 19 और श्लोक 6 में अन्य भाषाओं का उल्लेख है, साथ ही भविष्यवाणी भी है, जो समझ में आती है।

पुराने नियम में प्रशंसा और भविष्यवाणी दोनों एक साथ अक्सर आत्मा की प्रेरणा को दर्शाती हैं। तो जैसा कि अक्सर ल्यूक-एक्ट्स में होता है, ल्यूक अध्याय 1 और ल्यूक अध्याय 2 से शुरू होकर, शिमोन के साथ, जकर्याह के साथ, जॉन द बैपटिस्ट की भविष्यवाणी के साथ, आत्मा अक्सर भविष्यवाणी भाषण को प्रेरित करती है। और निःसंदेह, प्रेरितों के काम अध्याय 2, पद 17 और 18 में पतरस इसके बारे में इसी तरह बोलता है।

इसे ल्यूक-एक्ट्स के प्रत्येक अनुच्छेद में हमेशा एक ही तरह से व्यक्त नहीं किया जाता है, लेकिन अक्सर इसे किसी प्रकार के प्रेरित भाषण में व्यक्त किया जाता है, जो समझ में आता है क्योंकि ल्यूक-एक्ट्स में ल्यूक आत्मा पर विशेष जोर दे रहा है, विशेष रूप से आत्मा की ओर से हमें परमेश्वर के लिए बोलने में सक्षम बनाने के लिए। और अगर यह इसकी अंतिम अभिव्यक्ति होने जा रही है, तो कम से कम अक्सर हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि ऐसा तब भी होगा जब हम शुरू में इस सशक्तिकरण का अनुभव करेंगे। लेकिन देर-सबेर, जाहिर है, हम ऐसा करेंगे, क्योंकि आत्मा के सशक्तिकरण का यही उद्देश्य है।

1048, उस संस्कृति में बपतिस्मा रूपांतरण की सार्वजनिक घोषणा थी, लेकिन उन्होंने पहले उनका खतना नहीं किया। क्यों? क्योंकि वे मानते हैं कि यदि ईश्वर ने पहले से ही इन लोगों को वाचा समुदाय के सदस्यों के रूप में, ईश्वर के लोगों के हिस्से के रूप में स्वीकार कर लिया है, क्योंकि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं में इसका वादा किया गया था, तो ईश्वर अपनी आत्मा को उँडेलेंगे। ठीक है, यदि वे पहले से ही आत्मा में बड़ा बपतिस्मा प्राप्त कर चुके हैं, तो उन्हें केवल पानी का बपतिस्मा कैसे प्राप्त करना चाहिए जो आत्मा के बपतिस्मा की ओर इशारा करता है? तो, वे उन्हें वह देते हैं।

जहां तक खतने की बात है तो उन्हें खतना करने की जरूरत नहीं है क्योंकि भगवान ने पहले ही उनका स्वागत कर दिया है। वे अंततः इन अन्यजातियों के साथ निवास करते हैं। इससे अपराध तो बढ़ेगा, लेकिन इससे यह सबक भी मजबूत होगा कि वे इन बाधाओं को पार कर रहे थे और भगवान ने उन्हें पाक-साफ घोषित कर दिया था।

अब अध्याय 11, श्लोक 1 से 18 तक, पीटर को कालीन पर बुलाया जाता है। हाँ, वह मुख्य प्रेरित था, लेकिन फिर भी, वह नेतृत्व दल का हिस्सा था। वह अकेला नहीं था।

और इसलिए, जब वह वापस आता है तो उसे यरूशलेम में प्रेरितों और बुजुर्गों द्वारा कालीन पर बुलाया जाता है। जाहिर है, कैसरिया से यरूशलेम तक खबर तेजी से फैल जाएगी। लोग अक्सर यात्रा कर रहे थे।

ईश्वर का मार्ग हमारे मार्ग से भिन्न है। भगवान के लिए लोग प्राथमिकता हैं। और कभी-कभी यह चर्च की परंपराओं को ठेस पहुंचा सकता है, जैसे इसने फरीसियों को ठेस पहुंचाई थी।

यहां, यह ईसाइयों की धार्मिक संवेदनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है। इसलिए, अध्याय 11, श्लोक 2 और 3 में, पूरी तरह से यहूदी धर्म में परिवर्तित होने के लिए खतना आवश्यक था। हर किसी ने नहीं सोचा कि आपको बचाने के लिए इसकी आवश्यकता है।

केवल सबसे रूढ़िवादी यहूदी लोगों ने सोचा कि आपको बचाने के लिए इसकी आवश्यकता है, हालांकि कुछ ने ऐसा सोचा था। लेकिन अधिकांश यहूदी लोगों के लिए यह आवश्यक था। खैर, वस्तुतः सभी यहूदी लोगों का मानना था कि यदि आप ईश्वर के लोगों का हिस्सा बनना चाहते हैं तो यहूदी धर्म में परिवर्तित होना आवश्यक है।

इसलिए, पीटर के लिए इन अन्यजातियों के साथ रहना और इन अन्यजातियों के साथ भोजन करना समुदाय के अधिक रूढ़िवादी सदस्यों की धार्मिक संवेदनाओं को ठेस पहुँचाता है। और यह उत्पत्ति 17 से एक स्वाभाविक अनुमान था। और उत्पत्ति 17 को याद रखें, आपको अपने घराने का, सभी नौकरों का खतना करना होगा।

यदि सभी को इस लोगों का हिस्सा बनना है तो उनका खतना करना होगा। जिस किसी का खतना नहीं हुआ उसका सिर काट दिया जाएगा। लेकिन क्या होगा यदि खतना वाचा का एक चिह्न है, क्या यह केवल वाचा के वास्तविक अर्थ की ओर इशारा करने वाला एक चिह्न था? और यदि ईश्वर

ने लोगों का आध्यात्मिक रूप से इस तरह से खतना किया था कि मार्कर अनावश्यक हो गया था क्योंकि ईश्वर ने दिखाया था कि उसने उन्हें अपनी आत्मा देकर अपनी वाचा के लोगों के सदस्यों के रूप में स्वीकार कर लिया है, तो आत्मा का वह वादा अब पूरा हो चुका है।

सो वे यह कह रहे थे, कि तू ने अशुद्ध अन्यजातियों के साथ भोजन किया। और 1028 में पतरस को भी इससे समस्या हुई थी। बाद में, समुदाय के अधिक रूढ़िवादी सदस्यों को नाराज न करने के लिए, गलातियों 2:12 में, हमने पढ़ा कि पतरस खतनारहित अन्यजातियों के साथ भोजन नहीं करता था।

वह इसे अपने दम पर करने को तैयार था, लेकिन तब नहीं जब कुछ अन्य ईसाई आए जिन्हें जेम्स ने भेजा था और वे अपने अधिक रूढ़िवादी यहूदी समुदाय के भीतर गवाह बनने के बारे में चिंतित थे। और वह उन्हें नाराज नहीं करना चाहता था। वह उन्हें ठोकर खिलाना नहीं चाहता था।

परन्तु पौलुस ने कहा, तुम जानते हो, पौलुस स्वयं नहीं चाहता था कि लोग ठोकर खाएँ। लेकिन इस मामले में, यह सुसमाचार का मामला था जो दर्शाता है कि हम इन लोगों को पूर्ण भाइयों और बहनों के रूप में प्राप्त करते हैं। अध्याय 11, श्लोक 16 से 17, किसी को पूर्ण भाइयों और बहनों के रूप में प्राप्त करना, टेबल फ़ेलोशिप अनुबंध संबंध का एक रूप था।

11, 16, और 17. पतरस कहता है, देखो, परमेश्वर ने मुझ से जाने को कहा। और साथ ही, परमेश्वर ने उन्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया, वैसे ही जैसे उसने हमारे साथ किया था।

यह युगांत संबंधी वाचा की वास्तविकता है जिसकी ओर बाह्य खतना मात्र संकेत करता है। इसलिए हमने रूपांतरण के कार्य के रूप में बपतिस्मा लिया क्योंकि भगवान ने पहले ही उनके रूपांतरण को स्वीकार कर लिया था। आप जानते हैं, पुरातन काल में वक्ताओं द्वारा कभी-कभी इस्तेमाल किए जाने वाले ठोस अलंकारिक तर्कों में से एक आवश्यकता से प्रेरित तर्क था।

और आवश्यकता से सबसे मजबूत तर्कों में से एक, जहां यह था, मुझे यह करना था, मेरे पास कोई अन्य विकल्प नहीं था, यह दैवीय आवश्यकता थी। भगवान ने मुझसे ऐसा करने को कहा। खैर, मूल रूप से, पीटर यहाँ यही कहता है।

अब, हममें से कई लोगों ने उस दुर्व्यवहार को सुना है। भगवान ने मुझसे ऐसा करने को कहा। और यह वास्तव में सच नहीं है।

लेकिन इस मामले में पीटर के पास सबूत हैं। उसके पास गवाह हैं। भगवान ने मुझसे ऐसा करने को कहा।

और परमेश्वर ने अपनी आत्मा उण्डेलकर उनके परिवर्तन को स्वीकार किया। वही भावना जिसने उन्हें सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने के लिए प्रेरित किया, वही भावना है जिसने पुष्टि की कि यह उनका मिशन था और वह इसमें शामिल थे और वह अन्यजातियों का खतना किए बिना, उन्हें जातीय रूप से यहूदी बनने की आवश्यकता के बिना स्वागत कर रहे थे। अब, कई लोगों का मानना था कि धर्मी अन्यजातियों ने, जो नूह को दिए गए सात कानूनों का पालन किया था, या

पहले की परंपरा में, यह सात नहीं रहे होंगे, लेकिन पहले की परंपरा में, किसी भी मामले में, सभी अन्यजातियों को दिए गए ये बुनियादी कानून, कोई मूर्तिपूजा नहीं, नहीं यौन अनैतिकता, इत्यादि।

कई लोगों का मानना था कि वे बचाए गए थे, लेकिन किसी ने भी विश्वास नहीं किया कि इसने अन्यजातियों को वाचा के लोगों का सदस्य बना दिया। और फिर भी हम देख सकते हैं कि यरूशलेम में चर्च कितना रूढ़िवादी था क्योंकि वे पद 18 में जवाब देते हैं, वाह, यहां तक कि अन्यजातियों को भी, भगवान उन्हें अनन्त जीवन दे रहे हैं। यहाँ तक कि अन्यजातियों को भी, परमेश्वर उन्हें बचाने की अनुमति देता है।

इस बिंदु पर, ल्यूक एंटीओक में मंत्रालय में स्थानांतरित हो जाता है, और वह इसे काफी संक्षेप में प्रस्तुत करता है। हम देखते हैं कि अन्यजातियों तक पहुँचने में वास्तव में बहुत सारे लोग शामिल थे, लेकिन ल्यूक का ध्यान प्रमुख व्यक्तियों पर है। इसलिए वह यहां के व्यक्तियों के बारे में बात करने में ज्यादा समय नहीं बिताते हैं।

लेकिन अन्ताकिया में मंत्रालय, चर्च अब ग्रामीण गलील से शहरी यरूशलेम, महानगरीय अन्ताकिया, बहुसांस्कृतिक अन्ताकिया में स्थानांतरित हो गया है। बहुत तेजी से, चर्च विभिन्न तरीकों से सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से परिवर्तन कर रहा है। इसका आंशिक कारण यह था कि वे उत्पीड़न के कारण तितर-बितर हो गये थे।

आंशिक रूप से मेरा मानना है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र आत्मा उन्हें ऐसा करने में सक्षम बना रहा था, जहां भगवान अक्सर हमें अप्रत्याशित परिस्थितियों में ले जाते हैं, ऐसी परिस्थितियां जिनके लिए हम वास्तव में सांस्कृतिक रूप से तैयार नहीं थे। लेकिन वह हमें तैयारी देता है. आप हांगकांग में जैकी पुलिंगर, या डेविड विल्करसन के बारे में सोच सकते हैं जो ग्रामीण पेंसिल्वेनिया से न्यूयॉर्क शहर जा रहे हैं।

आप एडोनीराम जुडसन या अन्य, हडसन टेलर, अन्य जो सांस्कृतिक रूप से, विलियम कैरी के बारे में सोच सकते हैं, हालांकि वह हडसन टेलर जितना दूर नहीं गए, लेकिन स्थानीय संस्कृति के साथ पहचान की और स्थानीय संस्कृति और आज के मिशन आंदोलनों का हिस्सा बन गए। भारत और अफ्रीका, अन्य स्थानों पर जहां ईसाई सुसमाचार साझा करते हुए अपनी संस्कृति से अन्य संस्कृतियों की ओर परिवर्तित हो रहे हैं, कभी-कभी शहरी परिवेश से ग्रामीण परिवेश की ओर भी। खैर, सांस्कृतिक संक्रमण के संदर्भ में तीव्र संक्रमण दुर्लभ था। और इसलिए, यह बहुत लचीलापन दिखाता है।

अधिकांश आंदोलन इतनी तेजी से ग्रामीण से शहरी और महानगरीय की ओर नहीं बढ़े। लेकिन यहूदी धर्म सदियों से पहले ही इन विभिन्न सेटिंग्स को अपना चुका था। अन्यजातियों के शहरों में आपके पास यहूदी संस्कृति थी।

इन अन्यजातियों के शहरों में अभी भी उनके अपने समुदाय थे, लेकिन उन्होंने अनुकूलन कर लिया था। उन्होंने उस सांस्कृतिक भाषा को बोलना सीख लिया था जो काफी हद तक उनके आसपास थी। और इसने ईसाइयों के लिए एक माध्यम प्रदान किया।

पहले से ही कुछ तरीके मौजूद थे जिनसे उन्हें नई संस्कृति सीखने में मदद मिली। क्या हम नई मंत्रालय सेटिंग में जाने में सहज महसूस करते हैं? जब भगवान हमें प्रेरित करते हैं, तो हमें आगे बढ़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें सांस्कृतिक लचीलेपन का उपयोग करने और उन लोगों से सीखने की भी आवश्यकता है जिनके बीच हम जाते हैं ताकि हम उनके बीच सर्वोत्तम सेवा कर सकें और यदि वे पहले से ही आस्तिक हैं तो उनके साथ सेवा कर सकें।

1119, फीनिशिया, साइप्रस और अन्ताकिया में बड़े यहूदी समुदाय थे। जैसे ही प्रवासी यहूदी विश्वासी शाऊल के उत्पीड़न के कारण तितर-बितर हो गए, वे इन विभिन्न स्थानों पर चले गए। इसमें संभवतः शुरू में बरनबास भी शामिल है, हालाँकि उत्पीड़न कम होने के बाद वह यरूशलेम वापस जा सकता है।

वास्तव में, हम जानते हैं कि बरनबास शाऊल को प्रेरितों, या कुछ प्रेरितों से परिचित कराने के लिए वहाँ गया था। तो, अध्याय 8 श्लोक 1 से 4 तक विदेश में फैलने के बाद उनके लिए बसने के लिए ये प्राकृतिक स्थान थे। अध्याय 11, श्लोक 20 और 21 में, आपके पास यीशु में कुछ यहूदी विश्वासी हैं जो पहले से ही प्रवासी भारतीयों से हैं और बनाना शुरू कर रहे हैं एक नये प्रकार का संक्रमण। वह साइप्रस और साइरेन के विश्वासियों से कहता है।

इसमें बरनबास, कुरेनी के लूसियस जैसे लोग शामिल होंगे, और संभवतः कुरेनी का साइमन भी उनमें से एक था। उनके पुत्रों को संभवतः रोम के चर्च में जाना जाता है, जहाँ मार्क अध्याय 15 में साइरेन के साइमन को अलेक्जेंडर और रूफस के पिता के रूप में पेश किया गया है। इसलिए, मार्क के दर्शक पहले से ही उसके बच्चों को जानते हैं और रूफस वही रूफस हो सकता है जिसे हमने रोमन अध्याय 16 में सूचीबद्ध किया है।

यह निश्चित नहीं है, लेकिन यह एक वैध संभावना है। किसी भी मामले में, ये विश्वासी विदेशों में फैले हुए हैं और विशेष रूप से साइप्रस और साइरेन के लोग हेलेनिस्टों से भी बात करना शुरू करते हैं। खैर, हमने पहले हेलेनिस्टों के बारे में पढ़ा था।

मेरा मतलब है, ये यहूदी विश्वासी स्वयं हेलेनिस्ट थे। इसका क्या मतलब है कि वे हेलेनिस्टों से बात कर रहे थे? इसकी तुलना यहूदियों से की जाती है। तो, इस मामले में, इसका मतलब हेलेनिस्टिक यहूदी नहीं है, बल्कि इसका मतलब यूनानी या हेलेनाइज्ड सीरियाई हैं जिन्होंने ग्रीक संस्कृति को अपनाया था।

उन्होंने हेलेनिज्म के माध्यम से एक बड़ी भाषा और संस्कृति साझा की और इसने एक पुल बिंदु प्रदान किया जिसके माध्यम से वे उन तक पहुंच सकते थे। हेलेनिस्टिक यहूदी धर्म ने इन लोगों तक पहुँचने के लिए एक प्राकृतिक पुल बनाया और वे अन्यजातियों तक पहुँचने लगे। वह संभवतः पतरस से पहले का रहा होगा।

हम नहीं जानते क्योंकि कथा उस समय पहले से ही पीटर का पीछा कर रही थी, लेकिन निश्चित रूप से, यह पीटर ने जो किया था उससे कहीं अधिक व्यापक रूप से फैल रहा था। पीटर के मामले में, जेरूसलम चर्च इसे अपवाद के रूप में देख सकता था। अन्ताकिया के मामले में, अन्ताकिया यरूशलेम से काफी दूर था।

हो सकता है कि वे कुछ ऐसी चीज़ों से बच गए हों जिन पर जेरूसलम चर्च ने थोड़ा ध्यान दिया होता तो शायद वे संदेह से देखते। लेकिन किसी भी मामले में, सीरिया में ओरोन्टेस पर एंटीओक को अक्सर ओरोन्टेस पर एंटीओक कहा जाता था क्योंकि एंटीओकस नाम के कई राजा थे जो अपने नाम पर शहर शुरू करना या मौजूदा शहरों का नाम अपने नाम पर रखना पसंद करते थे। तो, वहाँ बहुत सारे अन्ताकिया थे।

हम बाद में अध्याय 13 में एक और अन्ताकिया के बारे में पढ़ेंगे। लेकिन यह बड़ा अन्ताकिया था। रोम और अलेक्जेंड्रिया के बाद, यह शायद पुरातनता, भूमध्यसागरीय पुरातनता का तीसरा सबसे बड़ा शहरी केंद्र था।

निवासियों की संख्या आमतौर पर 100,000 और 600,000 के बीच अनुमानित की जाती है, शायद इससे कहीं अधिक, कम से कम 300,000 या 400,000। तीसरा या कुछ लोग कहते हैं कि संभवतः साम्राज्य का चौथा सबसे बड़ा शहर, शायद तीसरा। यह रोम की सीरियाई सेना का मुख्यालय था।

तो, आपके पास वहाँ 6,000 सैनिक तैनात थे। यह वहाँ से सेल्यूसिया तक एक संक्षिप्त नदी यात्रा थी, जो इसका भूमध्यसागरीय बंदरगाह शहर था। और वहाँ से नौकायन करते हुए, साइप्रस वह निकटतम स्थान था जहाँ आप जा सकते थे।

धार्मिक रूप से, एंटीओक अपोलो के प्रसिद्ध पंथ केंद्र से पैदल दूरी पर था। तो, वहाँ बहुत सारे यहूदी थे, लेकिन यह मुख्य रूप से बुतपरस्त शहर भी था। वहाँ उनके कई रहस्यमय पंथ थे।

यह अपनी बुतपरस्त धार्मिक विविधता के लिए जाना जाता था। यह बहुत बहुलवादी, ऊर्ध्वगामी गतिशील, अनेक ऊर्ध्वगामी गतिशील लोग और अनेक ऊर्ध्वगामी गतिशील यहूदी लोग थे जिन्हें आमतौर पर स्वीकार कर लिया जाता था। यहूदी-रोमन युद्ध के बाद एंटीओक में यहूदियों के प्रति थोड़ा पूर्वाग्रह था, लेकिन वहाँ यहूदी समुदाय का नरसंहार नहीं हुआ जैसा कि दक्षिण में, यहूदिया के करीब कुछ अन्य स्थानों पर हुआ था।

वहाँ बहुत सारे ईश्वर-भयवादी थे, बहुत सारे धर्म-परिवर्तन करने वाले लोग थे। हमने पहले अधिनियमों में एक के बारे में पढ़ा था। यह अलेक्जेंड्रिया की तुलना में बहुत कम पृथक था।

अलेक्जेंड्रिया में, मिस्रवासी, यूनानी और यहूदी आमतौर पर शहर के अलग-अलग हिस्सों में रहते थे, और यूनानी केवल वही बनना चाहते थे जो वास्तव में शहर के नागरिक हों। अन्ताकिया अधिक महानगरीय था। वहाँ विभिन्न संस्कृतियों की स्वीकार्यता अधिक थी।

कुछ अधिक उदार प्रवासी यहूदियों ने गवाही देने के लिए बुतपरस्त दर्शन में सर्वश्रेष्ठ का उपयोग किया। वे पहले से ही वे सांस्कृतिक रूपांतरण कर रहे थे। अन्ताकिया सहित इनमें से कुछ स्थानों में खतना एक कम मुद्दा था।

हमने एक अन्य स्थान के बारे में पढ़ा जहां एडियाबिन के राजा, जिसने उन्हें यहूदी धर्म में विश्वास दिलाया था, ने नहीं सोचा था कि उन्हें खतना करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, नहीं, यह संभवतः आपके लोगों के लिए बहुत अपमानजनक होगा। ऐसा मत करो।

तभी एक और आदमी आया और बोला, अरे पाखंडी! यदि आप वास्तव में यहूदी धर्म में परिवर्तित होने जा रहे हैं, तो आपको पूरी तरह से जाना होगा और खतना कराना होगा। उसने किया।

उसके आस-पास मौजूद अन्य यहूदी लोग डर गए कि इससे प्रतिक्रिया पैदा होने वाली है। इससे बहुत से लोग आहत हुए, लेकिन कोई विद्रोह या कुछ भी नहीं हुआ। हर किसी ने इस बात पर ज़ोर नहीं दिया कि हर किसी का खतना किया जाए।

लेकिन ईश्वर के लोगों का पूरी तरह से हिस्सा बनने के लिए, पारंपरिक यहूदी लोग इस पर जोर देंगे। अध्याय 11, श्लोक 22 से 24। अब हम मुख्य पात्रों में से एक, बरनबास पर वापस आ रहे हैं, जिसका वास्तव में अध्याय चार में परिचय कराया गया था।

ल्यूक को मौका मिलने पर लोगों का पहले से ही परिचय कराना पसंद है। बरनबास ने लोगों में परमेश्वर के कार्य पर भरोसा किया। उसने अध्याय नौ और पद 27 में शाऊल के साथ ऐसा किया, जब वह उसे ले गया और उसे प्रेरितों से मिलवाया, या गलातियों में से कुछ प्रेरितों को इकट्ठा किया।

1537 से 1539 में, जब वह और पॉल अलग हो गए क्योंकि बरनबास मार्क को अपने साथ ले जाना चाहता था और उसे दूसरा मौका देना चाहता था, बरनबास ने लोगों में भगवान के काम पर भरोसा किया। यह कुछ ऐसा था जिसे यहूदी धर्म में भी महत्व देने की परंपरा थी। उन्होंने हिलेल के बारे में बात की, जो प्रमुख संतों में से एक थे।

हिलेल और शम्माई फरीसीवाद के दो विद्यालयों के नेता थे। हिलेलाइट्स, जो यरूशलेम के विनाश के बाद प्रबल हुए, उन्होंने हिलेल को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जो बहुत ही गैर-यहूदी था और अन्यजातियों को वहां ले गया जहां वे थे और उन्हें यहूदी तरीकों का पालन करने में मदद की। पॉल अधिक आलोचनात्मक था।

परमेश्वर ने पॉल और पॉल के व्यक्तित्व का भी नाटकीय ढंग से उपयोग किया। हमारे पास अलग-अलग व्यक्तित्व हैं और भगवान हमारे अलग-अलग व्यक्तित्वों का उपयोग कर सकते हैं। यह हमारे व्यक्तित्व के गलत हिस्सों के प्रति अत्यधिक कठोर होने का कोई बहाना नहीं है।

मार्टिन लूथर, भगवान ने उनका बहुत उपयोग किया, लेकिन कभी-कभी वे बहुत कठोर बातें करते थे, खासकर अपने बाद के वर्षों में, इस तरह से कि अधिकांश प्रोटेस्टेंट आज सहमत नहीं होंगे, अधिकांश लूथरन आज सहमत नहीं होंगे। लूथर ने कहा, ठीक है, भगवान ने मुझे एक हथियार बनाया है। भगवान ने मुझे इस तरह बनाया है।

यह सच हो सकता। उसे ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो दृढ़ता से खड़ा रह सके, लेकिन कभी-कभी वह बहुत आगे बढ़ जाता था, जैसे कि उनके आराधनालयों और इस तरह की चीज़ों को जलाना। वह थोड़ा अतिवादी था।

हममें से अधिकांश में वे कमज़ोरियाँ हैं। हमें उनसे सावधान रहने की ज़रूरत है। लेकिन किसी भी मामले में, बरनबास, उसकी ताकत, उसकी एक ताकत यह थी कि उसने लोगों में भगवान के काम पर भरोसा किया और उसने लोगों का स्वागत किया।

यह हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। 11:25 में, उसे एहसास होता है कि उसे मदद के लिए किसी की ज़रूरत है। वे अन्ताकिया में बहुत से लोगों को मसीह की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

वे अब अन्यजातियों को मसीह की ओर जीत रहे हैं। और हम्म, मैं किसकी सहायता कर सकता हूँ? खैर, यरूशलेम बहुत दूर था, याद है? परन्तु टार्सस उत्तर में सौ मील दूर था। यह बहुत दूर है, लेकिन इस बिंदु पर यह यरूशलेम जितना दूर नहीं है।

और वह जानता है, कि पौलुस को तरसुस भेज दिया गया। वह वहाँ प्रेरितों के काम अध्याय नौ में था। और वह यह भी जानता है कि परमेश्वर ने पॉल के लिए क्या किया।

वह पॉल की बुलाहट को जानता है। आह, यह अन्यजातियों तक पहुँचने के लिए एक एजेंट बनना है। किसी ऐसे व्यक्ति से बेहतर कौन मिल सकता है जिसके पास पहले से ही यह कॉलिंग है? इसलिए, वह उत्तर की ओर टार्सस जाता है और पॉल को ढूँढता है और उसे इस मुख्य स्थान पर वापस लाता है जहाँ वही काम हो रहा है जिसके लिए भगवान ने पॉल को बुलाया था।

बरनबास लोगों को जोड़ने में अच्छा है जैसे उसने पॉल को पीटर और जेम्स से जोड़ा था। 11:26, अन्ताकिया में शिष्यों को पहले ईसाई कहा जाता था। मैं ईसाई नाम का उपयोग करता रहता हूँ, लेकिन वास्तव में, नए नियम में, यह यीशु के अनुयायियों के लिए बहुत सामान्य नाम नहीं है।

यह यहाँ एक उपनाम है। दूसरी जगह जहाँ यह प्रकट होता है, ठीक है, यह बाद में अधिनियमों में भी एक बार प्रकट होता है, यह 1 पतरस 4:16 में कानूनी आरोप के रूप में प्रकट होता है, यदि आप में से किसी पर ईसाई के रूप में आरोप लगाया जाता है। उन्हें यह उपनाम कैसे मिला? खैर, ऐसा लगता है कि यह लोगों द्वारा राजनीतिक दलों का वर्णन करने के तरीके के अनुरूप है।

सीज़र के पक्षपातियों को सीज़ेरियन कहा जाता था। हेरोदेस के पक्षपाती हेरोडियन थे। पोम्पेई के पक्षधर पोम्पेई थे।

अन्ताकिया के लोग लोगों का मज़ाक उड़ाने के लिए जाने जाते थे। हालाँकि, दूसरी शताब्दी में ईसाइयों ने इस लेबल को गर्व के साथ अपनाया। तो, यह मूल रूप से एक उपनाम के रूप में शुरू हुआ, लेकिन हम इसका उपयोग कर सकते हैं।

हम यीशु के पक्षधर हैं, जो सच्चा राजा है। और भले ही लोगों का उद्देश्य हमारा मज़ाक उड़ाना हो, हम उस शीर्षक के स्वामी हो सकते हैं। हम सच्चे राजा यीशु के हैं।

11:27 में, जब पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में सेवा कर रहे थे, तो यरूशलेम से भविष्यवक्ता आये। अब, प्रारंभिक ईसाई धर्म इस संबंध में बहुत विशिष्ट था। आपके पास सांस्कृतिक केंद्रों पर यूनानी भविष्यवाणियाँ थीं, लेकिन आपके पास कोई अन्य भविष्यसूचक गतिविधियाँ नहीं हैं जैसा कि हम नए नियम में पाते हैं।

नए नियम में हम जो देखते हैं, वह संभवतः 1 शमूएल 19 में आप जो देखते हैं, उसके समान है, जहां आपके पास भविष्यवक्ताओं को भविष्यवाणी करते हुए और शमूएल को उनकी अध्यक्षता करते हुए दिखाया गया है। या 2 राजा 2 और 4 में, जहां आपके पास भविष्यवक्ताओं के बेटे हैं और एलीशा उन्हें शिष्य बनाने में मदद कर रहा है। संभवतः एलिय्याह ने पहले के कई भविष्यवक्ताओं को शिष्य बनाया था।

हमारे पास संपूर्ण भविष्यवाणी आंदोलन हैं ताकि यहां, अधिनियमों के मामले में, हम इन भविष्यवक्ताओं के बारे में पढ़ें जो एक साथ यात्रा करते हैं, जो यरूशलेम से एंटीओक तक आते हैं, जो एक लंबी दूरी है। कुछ लोगों ने भटकते पैगम्बरों के बारे में बात की है, लेकिन प्राचीन काल में गतिशीलता अक्सर होती थी। तो, इसके बारे में वास्तव में विशिष्ट बात यह है कि आपके पास भविष्यवक्ताओं के समूह हैं।

और निस्संदेह, प्रेरितों के काम 2:17-18, जहां भविष्यवाणी की आत्मा हम सभी को यीशु के बारे में प्रभु के वचन को घोषित करने के लिए सशक्त बनाती है। यह विशिष्ट है। यह उस भावना के उंडेले जाने की बात करता है जिसकी प्राचीन काल में किसी और ने अपने समय में इस हद तक उम्मीद नहीं की थी।

एस्सेन्स सबसे करीब आ गया और यह इस डिग्री के करीब भी नहीं था। अध्याय 11 और पद 28, अच्छा, भविष्यवक्ता किस बारे में बात करते हैं? उनमें से एक मुख्य चीज़ जिसके बारे में वे बात करते हैं वह है अकाल। और यह घटित हुआ, लूका कहता है, क्लॉडियस के समय में।

खैर, वास्तव में, यह अकालों की एक श्रृंखला थी। यह बहुत गंभीर बात थी कि क्लॉडियस के शासनकाल के दौरान कृषि का विनाश हुआ। वर्ष 46 में अनाज की ऊंची कीमतें प्रमाणित हुईं।

51 तक, आपके पास रोम में अनाज की कमी है, जिससे सम्राट क्लॉडियस सड़कों पर भीड़ में है। इस अवधि के दौरान, कुछ यहूदी लोग या यहूदी धर्म से सहानुभूति रखने वाले यरूशलेम में गरीबों की मदद करना चाहते थे क्योंकि यहूदिया में अकाल बहुत गंभीर था, खासकर 45 और 46 के आसपास। इसलिए एडियाबेने की रानी हेलेना, यह अगली पीढ़ी से है।

हमने अदियाबेने के राजा के यहूदी धर्म में आस्था रखने वाले के बारे में बात की। अदियाबेने की रानी हेलेना ने मिस्र का अनाज बड़ी रकम में खरीदा क्योंकि अकाल के कारण यह बहुत महंगा था। मिस्र में भी लोग भूखे थे।

उसने यहूदिया में लोगों की मदद के लिए बड़ी मात्रा में भोजन खरीदा। खैर, अन्ताकिया में विश्वासियों ने सुना है कि यह अकाल दुनिया भर में होने वाला है, और उन्हें एहसास हुआ कि यहूदिया में विश्वासियों में से कई गरीब हैं। अन्ताकिया में, लोग, कम से कम बहुत से विश्वासियों की ओर अधिक ऊपर की ओर गतिशील होने की प्रवृत्ति रखते थे।

और इसलिए, वे राहत भेजते हैं। अब ध्यान रखें कि भविष्यवाणी में कहा गया था कि पूरी दुनिया में अकाल पड़ेगा। तो, अकाल अन्ताकिया को भी प्रभावित करने वाला था।

इसलिए भले ही उनके पास अधिक संसाधन थे, फिर भी यह बलिदान का कार्य था। और यह हमें कुछ बताता है। यह हमें बताता है कि विश्वासियों ने केवल अपने साथी विश्वासियों का सम्मान नहीं किया और स्थानीय स्तर पर अपने साथी विश्वासियों की देखभाल नहीं की, जैसा कि अधिनियम 2:44 और 45, या अधिनियम 4:32-35 में है। वह अंतर-सांस्कृतिक अकाल राहत भी हो सकती है।

यह विदेश में अकाल राहत हो सकती है। आज हमारे सामने अक्सर ऐसी स्थितियाँ आती हैं जहाँ विशेष क्षेत्रों में अकाल पड़ता है। भगवान ने दुनिया भर में चर्च को इतने संसाधन दिए हैं कि कहीं का चर्च कहीं और की चर्च की मदद कर सकता है।

और उनकी ज़रूरत के समय में, शायद अन्यत्र चर्च भी उनकी मदद करेगा। हम मसीह में एक शरीर हैं, और हमें एक साथ मिलकर काम करना चाहिए। और पॉल इन सभी बिंदुओं को 2 कुरिन्थियों 8-9 में सामने लाता है।

पॉल विशेष रूप से यहूदिया में चर्च के लिए धन भी जुटा रहा था। इसका एक कारण यह है, जैसा कि वे कहते हैं, वे गरीब थे। उन्होंने जो कारण दिया उसका एक और हिस्सा यह था कि उन्होंने कहा, हम अन्यजातियों पर उनका एहसान है।

उन्होंने हमें सुसमाचार दिया। वह जातीय सुलह के लिए काम कर रहे थे क्योंकि यहूदी चर्चों और प्रवासी चर्चों के बीच कुछ मुद्दों, विशेषकर अन्यजातियों के खतना को लेकर थोड़ा तनाव था। खैर, हेलेना ने जो किया उसे छोड़कर अधिकांश यहूदी राहत प्रयास स्थानीय थे।

तो, यह एक असाधारण विचार था, लेकिन यह एक, फिर से, हम नए नियम में कहीं और पाते हैं। साम्राज्य में बहु-प्रांतीय संगठन संदिग्ध थे। इसलिए, लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर चीजें साझा करना साम्राज्य के लिए बहुत अच्छा नहीं रहा।

लेकिन चर्च ने यही किया। वे भविष्यवाणी के माध्यम से इस अकाल के लिए पहले से तैयार थे। खैर, आपको उत्पत्ति 41 याद होगा, कि भगवान ने उस समय की दुनिया, मिस्र और कनान, आसपास के क्षेत्र में आने वाले अकाल के बारे में पहले से ही चेतावनी दी थी।

और परमेश्वर ने उन्हें तैयार करने के लिए यूसुफ का उपयोग किया। और उसी तरह, ये भविष्यवक्ता थे और अन्ताकिया में चर्च ने बुद्धिमता के साथ इसका जवाब दिया। अध्याय 12 में, हम अगले पाठ में पतरस के उद्धार को देखेंगे।

यह एक्ट्स की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह सत्र 13, अधिनियम अध्याय 10 और 11 है।